

भज गोविंदम्

यह आदिशंकराचार्य द्वारा रचित एक पावन स्तोत्र है। भारतीय आध्यात्मिक अथवा गहरे धार्मिक जगत में आदिशंकराचार्य अपूर्व प्रतिभाशाली एवं सर्वाधिक आदरणीय व्यक्ति हुए हैं। वे यीशु की तरह इस धरती पर दूसरे प्रबोधयुक्त धार्मिक मनीषी थे जो 33 वर्ष की अल्पायु में ही निर्वाण को उपलब्ध हो गए थे। परंतु मानवता पर उन्होंने अमिट छाप छोड़ी है। इस स्तोत्र का गायन अत्यंत आनंददायक है। इसके लय से उत्पन्न स्पंदन स्वतःस्फूर्त नृत्य करने हेतु प्रेरित करता है। एक पाश्चात्य संवेदनशील महिला ने इन पवित्र श्लोकों को मूल संस्कृत भाषा में ही गाया है। इस गायन के वीडियो का लिंक भी इस संदेश के साथ भेजा जा रहा है -

<https://youtu.be/xb-Go2fLdPY>

ऋषि एवं संत शंकराचार्य इन पवित्र एवं मधुर श्लोकों के माध्यम से हमलोगों को समझाते हुए मन की कल्पना एवं मूढता को त्यागकर भगवता (- विभाजनरहित जागरूकता - कृष्ण या गोविंद) की प्रज्ञा के प्रति जागृत होने के लिए अनुप्रेरित कर रहे हैं। एक अत्यंत समर्पित और तकनीकी रूप से निपुण क्रियावान ने इस संदेश के मूलपाठ (टेक्स्ट) को संस्कृत और हिन्दी भाषा में साथ-साथ प्रस्तुत किया है। यह 5 पृष्ठों में है। कृपया इस संदेश पर ध्यान करें तथा स्तोत्र के वीडियो को भी देखें और सुनें। संभव है, आनंद के आंसू बहने लगेंगे। गुरुजी का यह विनम्र सुझाव है।

जय गोविंदम् - कृष्णम् - आदिगुरुरमम् ।

संस्कृत श्लोक	गुरु प्रक्रिया की अनुभूति
<p>भज गोविन्दं भज गोविन्दं गोविन्दं भज मूढमते । सम्प्राप्ते सन्निहिते काले नहि नहि रक्षति डुकृङ्करणे ॥ १ ॥</p>	<p>हे मूढ! गोविंद को भजो, गोविंद को भजो, गोविंद को भजो, क्योंकि मृत्यु के समय व्याकरण के नियम तुम्हारी रक्षा नहीं करेंगे।</p>
<p>मूढ जहीहि धनागमतृष्णां कुरु सद्बुद्धिं मनसि वितृष्णाम् । यल्लभसे निजकर्मोपात्तं वित्तं तेन विनोदय चित्तम् ॥ २ ॥</p>	<p>हे मूढ! धनसंग्रह की अपनी तृष्णा को त्याग दो, अपने मन को सत्य के प्रति समझदारी में लगाओ और पूर्वकृत कर्मों से प्राप्त धन में ही संतुष्ट रहो।</p>

संस्कृत श्लोक	गुरु प्रक्रिया की अनुभूति
<p>नारीस्तनभरनाभीदेशं दृष्ट्वा मा गा मोहावेशम् । एतन्मांसवसादिविकारं मनसि विचिन्तय वारं वारम् ॥ ३ ॥</p>	<p>नारी की नाभि एवं स्तन को देखकर कामुकता एवं कामोन्माद में मत डूबो, अपितु उनसे मुक्त रहो। वे और कुछ नहीं, बल्कि मांस के ही रूप हैं। इस सत्य का अपने मन में बारंबार विचार करो, चिंतन करो।</p>
<p>नलिनीदलगतजलमतितरलं तद्वज्जीवितमतिशयचपलम् । विद्धि व्याध्यभिमानग्रस्तं लोकं शोकहतं च समस्तम् ॥ ४ ॥</p>	<p>मनुष्य का जीवन कमल के पते पर थरथराती हुई जल की बूँदों की तरह अस्थिर है। ज्ञात रहे कि संपूर्ण विश्व रोग, अहंकार एवं शोक से ग्रस्त है।</p>
<p>यावद्वित्तोपार्जनसक्त- स्तावन्निजपरिवारो रक्तः । पश्चाज्जीवति जर्जरदेहे वार्ता कोऽपि न पृच्छति गेहे ॥ ५ ॥</p>	<p>जब तक व्यक्ति स्वस्थ है तथा अपने परिवार का भरण - पोषण करने में समर्थ है, तभी तक परिवार के सदस्य उसके प्रति स्नेह दर्शाते हैं। लेकिन बुढ़ापे के कारण शरीर के निर्बल होते ही घर में कोई उससे बात भी नहीं करता है।</p>
<p>यावत्पवनो निवसति देहे तावत्पृच्छति कुशलं गेहे । गतवति वायौ देहापाये भार्या बिभ्यति तस्मिन्काये ॥ ६ ॥</p>	<p>जब तक व्यक्ति जीवित है, तभी तक परिवार के सदस्य उससे कुशल-क्षेम पूछते हैं। किंतु शरीर से प्राण निकलते ही पत्नी भी मृत शरीर से भयभीत होकर दूर भागती है।</p>
<p>बालस्तावत्क्रीडासक्तः तरुणस्तावत्तरुणीसक्तः । वृद्धस्तावच्चिन्तासक्तः परमे ब्रह्मणि कोऽपि न सक्तः ॥ ७ ॥ var परे</p>	<p>बाल्यावस्था खेल के प्रति अनुरक्ति में, युवावस्था स्त्रियों के प्रति आसक्ति में तथा वृद्धावस्था नाना प्रकार की निरर्थक दुश्चिन्ताओं में खो जाती है। परंतु शायद ही कोई ऐसा है जो परब्रह्म में लीन होना चाहता है।</p>

संस्कृत श्लोक	गुरु प्रक्रिया की अनुभूति
<p>का ते कान्ता कस्ते पुत्रः संसारोऽयमतीव विचित्रः । कस्य त्वं कः कुत आयात- स्तत्त्वं चिन्तय तदिह भ्रातः ॥ ८ ॥</p>	<p>कौन तुम्हारी पत्नी है? कौन तुम्हारा पुत्र है? यह संसार अत्यंत विचित्र है। तुम किसके हो? कहां से आए हो? भाई, इसकी सत्यता पर ध्यान करो।</p>
<p>सत्सङ्गत्वे निस्सङ्गत्वं निस्सङ्गत्वे निर्मोहत्वम् । निर्मोहत्वे निश्चलतत्त्वं निश्चलतत्त्वे जीवन्मुक्तिः ॥ ९ ॥</p>	<p>सत्संग अथवा संतों के संग से अनासक्ति का उदय होता है, अनासक्ति से 'मोह से मुक्ति' होती है और 'मोह से मुक्ति' से चित्त स्थिर होता है। चित्त के स्थिर होने से जीवनमुक्ति का प्रादुर्भाव होता है।</p>
<p>वयसि गते कः कामविकारः शुष्के नीरे कः कासारः । क्षीणे वित्ते कः परिवारः ज्ञाते तत्त्वे कः संसारः ॥ १० ॥</p>	<p>यौवन बीत जाने पर कामविकार का औचित्य क्या? जल सूख जाने पर जलाशय की सार्थकता क्या? धन के समाप्त हो जाने पर रिश्तेदार कहाँ ? और सत्य का ज्ञान होने पर चित्तवृत्ति की आपाधापी कहाँ?</p>
<p>मा कुरु धनजनयौवनगर्वं हरति निमेषात्कालः सर्वम् । मायामयमिदमखिलं हित्वा var बुध्वा ब्रह्मपदं त्वं प्रविश विदित्वा ॥ ११ ॥</p>	<p>धन, मित्र एवं यौवन पर गर्व मत करो। काल इन्हें क्षणभर में नष्ट कर देता है। मायारूपी संसार की भ्रान्ति से स्वयं को मुक्त करो और कालातीत सत्य को उपलब्ध होओ।</p>
<p>दिनयामिन्यौ सायं प्रातः शिशिरवसन्तौ पुनरायातः । कालः क्रीडति गच्छत्यायु- स्तदपि न मुञ्चत्याशावायुः ॥ १२ ॥</p>	<p>दिन और रात्रि, प्रातः और संध्या, शीत और वसंत आते-जाते रहते हैं। काल के इस खेल में आयु क्षीण होती जाती है लेकिन इच्छाओं की आंधी कभी समाप्त नहीं होती।</p>

संस्कृत श्लोक	गुरु प्रक्रिया की अनुभूति
<p>का ते कान्ता धनगतचिन्ता वातुल किं तव नास्ति नियन्ता । त्रिजगति सज्जनसङ्गतिरेका भवति भवार्णवतरणे नौका ॥ १३ ॥</p>	<p>अरे पागल! धन की इतनी चिंता क्यों है? क्या तुम्हारा कोई पथ-प्रदर्शक नहीं है? तीनों लोकों में एक ही वस्तु है जो भवसागर से तुम्हारी रक्षा कर सकती है और वह है सत्संग। अतः शीघ्र ही संतों के संग अर्थात् सत्संग की नौका पर आरूढ़ हो जाओ।</p>
<p>द्वादशमञ्जरिकाभिरशेषः कथितो वैयाकरणस्यैषः । उपदेशोऽभूद्विद्यानिपुणैः श्रीमच्छङ्करभगवच्छरणैः ॥ १३अ ॥</p>	<p>भगवद्पाद के समादर से विभूषित सर्वज्ञ शंकर द्वारा उपर्युक्त 12 श्लोकों (2 से 13) का पुष्पहार एक वैयाकरण को प्रदान किया गया।</p>

ऐसा प्रतीत होता है कि उपर्युक्त श्लोक ही भज गोविंदम् स्तोत्र के मूल श्लोक हैं। फिर भी इससे संबंधित अन्य प्रचलित श्लोकों को भी यहाँ प्रस्तुत किया जा रहा है।

निम्नलिखित 14 श्लोक 'चतुर्दशमंजरीका' के नाम से जाने जाते हैं तथा इन श्लोकों की रचना का श्रेय आदिशंकराचार्य के शिष्यों को दिया जाता है।

संस्कृत श्लोक	गुरु प्रक्रिया की अनुभूति
<p>Stanza below is attributed to padmapaada.</p> <p>जटिलो मुण्डी लुञ्छितकेशः काषायाम्बरबहुकृतवेषः । पश्यन्नपि च न पश्यति मूढो ह्युदरनिमित्तं बहुकृतवेषः ॥ १४ ॥</p>	<p>इस श्लोक की रचना का श्रेय पद्मपाद को दिया जाता है –</p> <p>अनेक जटाधारी हैं, अनेक मुंडित सिर हैं, कई ऐसे हैं जिनके केश नॉच दिये गये हैं। कई भगवा वस्त्रधारी हैं तो अन्य अनेक दूसरे रंगों के वस्त्र पहने हैं। ये सभी वस्तुतः आडम्बर हैं जो पेट पालने के लिए किए जाते हैं। इस सत्य को देखते हुए भी ये मूढ़जन इसे नहीं देख पाते।</p>

Stanza attributed to toTakAchArya.

अङ्गं गलितं पलितं मुण्डं
दशनविहीनं जातं तुण्डम् ।
वृद्धो याति गृहीत्वा दण्डं
तदपि न मुञ्चत्याशापिण्डम् ॥ १५ ॥

इस श्लोक की रचना का श्रेय तोटकाचार्य को दिया जाता है –

वृद्ध का शरीर अशक्त, सिर केशरहित तथा जबड़ा दंतहीन हो गया है और वह वैशाखी के सहारे झुक कर चलता है, फिर भी उसकी आसक्ति क्षीण नहीं हुई है और वह व्यर्थ की इच्छाओं के पाश से मुक्त नहीं हो सका है।

Stanza attributed to hastAmalaka.

अग्रे वह्निः पृष्ठे भानुः
रात्रौ चुबुकसमर्पितजानुः ।
करतलभिक्षस्तरुतलवास-
स्तदपि न मुञ्चत्याशापाशः ॥ १६ ॥

इस श्लोक की रचना का श्रेय हस्तामलक को दिया जाता है –

देखो, जो व्यक्ति अपने शरीर के अग्र भाग को अग्नि के सामने बैठकर गर्म करता है तथा पृष्ठ भाग सूर्य के ताप से गर्म करता है, रात्रि में शीत से बचने हेतु सिर को घुटनों से सटाकर कर सोता है; भिक्षा पात्र के अभाव में वह हाथ में मिले भिक्षा के अन्न ही खाता है और वृक्ष के नीचे सोता है, फिर भी वासनाओं के बंधन से वह मुक्त नहीं हो पाता है।

Stanza attributed to Subodha.

कुरुते गङ्गासागरगमनं
व्रतपरिपालनमथवा दानम् ।
ज्ञानविहीनः सर्वमतेन
मुक्तिं न भजति जन्मशतेन ॥ १७ ॥ var भजति न मुक्तिं

इस श्लोक की रचना का श्रेय सुबोध को दिया जाता है –

व्यक्ति गंगासागर जा सकता है, व्रत-उपवास कर सकता है तथा दान में धन बाँट सकता है, फिर भी आत्मज्ञान के अभाव में सैकड़ों जन्म लेने के पश्चात भी उसे मोक्ष की प्राप्ति नहीं हो सकती है।

Stanza attributed to vArttikakAra (sureshvara).

सुरमंदिरतरुमूलनिवासः
शय्या भूतलमजिनं वासः ।
सर्वपरिग्रहभोगत्यागः
कस्य सुखं न करोति विरागः ॥ १८ ॥

इस श्लोक की रचना का श्रेय वार्तिककार (सुरेश्वर) को दिया जाता है –

मंदिर में अथवा वृक्ष के नीचे निवास करो, मृगचर्म धारण करो और पृथ्वी माता को शय्या बनाओ। समस्त आसक्तियों और सुख-सुविधाओं का त्याग करो। ऐसे वैराग्य को उपलब्ध मनुष्य धन्य हैं। ये संतोष के आनंद से वंचित नहीं रह सकते हैं।

संस्कृत श्लोक

गुरु प्रक्रिया की अनुभूति

Stanza attributed to nityAnanda.

योगरतो वा भोगरतो वा
सङ्गरतो वा सङ्गविहीनः ।
यस्य ब्रह्मणि रमते चित्तं
नन्दति नन्दति नन्दत्येव ॥ १९ ॥

इस श्लोक की रचना का श्रेय नित्यानंद को दिया जाता है –

व्यक्ति योग में, भोग में, आसक्ति में या विरक्ति में सुख पा सकता है, परंतु योग (क्रियायोग) मन से मुक्ति है, जीवन में जागृति है, न कि जीवन से भागना है। अतः परमानंद को तो केवल वही उपलब्ध हो सकता है जो मन से मुक्त है और निरंतर ब्रह्म में लीन रहता है।

Stanza attributed to Anandagiri.

भगवद्गीता किञ्चिदधीता
गङ्गाजललवकणिका पीता ।
सकृदपि येन मुरारिसमर्चा
क्रियते तस्य यमेन न चर्चा ॥ २० ॥

इस श्लोक की रचना का श्रेय आनन्दगिरि को दिया जाता है –

व्यक्ति ने यदि थोड़ा भी भगवद्गीता का अध्ययन कर लिया है, गंगाजल की एक बूंद भी पी ली है, मात्र एक बार भी कृष्ण की उपासना कर ली है तो यम से उसका कोई विवाद संभव नहीं है।

Stanza attributed to dRiDhabhakti.

पुनरपि जननं पुनरपि मरणं
पुनरपि जननीजठरे शयनम् ।
इह संसारे बहुदुस्तारे
कृपयाऽपारे पाहि मुरारे ॥ २१ ॥

इस श्लोक की रचना का श्रेय दृढभक्ति को दिया जाता है –

पुनः जन्म, पुनः मृत्यु और पुनः मातृगर्भ में ठहरने का चक्र निरन्तर चलता रहता है। सचमुच, इस असीम भवसागर को पार करना कठिन है। हे कृष्ण! कृपा करके आप ही मुझे मुक्त करें।

Stanza attributed to nityanAtha.

रथ्याचर्पटविरचितकन्थः
पुण्यापुण्यविवर्जितपन्थः ।
योगी योगनियोजितचित्तो
रमते बालोन्मत्तवदेव ॥ २२ ॥

इस श्लोक की रचना का श्रेय नित्यनाथ को दिया जाता है -

मार्गों पर जीर्ण-शीर्ण वस्त्रों के फेंके जाते रहने के कारण साधु को वस्त्र की कमी नहीं होती। पाप-पुण्य से मुक्त वह परम लक्ष्य की ओर बढ़ता जाता है। ईश्वर से अभिन्नावस्था में रहता हुआ वह एक शिशु की तरह पवित्र और निर्विकार आनंद में उन्मत्त रहता है।

Stanza attributed to yogAnanda.

कस्त्वं कोऽहं कुत आयातः
का मे जननी को मे तातः ।
इति परिभावय सर्वमसारम्
विश्वं त्यक्त्वा स्वप्नविचारम् ॥ २३ ॥

इस श्लोक की रचना का श्रेय योगानंद को दिया जाता है -

तुम कौन हो? मैं कौन हूँ? कहां से आया हूँ? मेरी माता कौन है? मेरा पिता कौन है? इन पर ध्यान करो। सभी वस्तुओं को सारहीन जानते हुए इस असार संसार को स्वप्नवत् त्याग दो।

Stanza attributed to surendra.

त्वयि मयि चान्यत्रैको विष्णु-
व्यर्थं कुप्यसि मय्यसहिष्णुः ।
भव समचित्तः सर्वत्र त्वं
वाञ्छस्यचिराद्यदि विष्णुत्वम् ॥ २४ ॥

इस श्लोक की रचना का श्रेय सुरेंद्र को दिया जाता है -

मुझमें, तुझमें और सभी वस्तुओं में उसी एक विष्णु का वास है। तुम्हारा क्रोध एवं अधैर्य व्यर्थ है। यदि तुम विष्णुपद को प्राप्त होना चाहते हो तब सदा समभाव में रहो।

Stanza attributed to medhAtithira.

शत्रौ मित्रे पुत्रे बन्धौ
मा कुरु यत्नं विग्रहसन्धौ ।
सर्वस्मिन्नपि पश्यात्मानं
सर्वत्रोत्सृज भेदाज्ञानम् ॥ २५ ॥

इस श्लोक की रचना का श्रेय मेधातिथिर को दिया जाता है -

मित्र हो, शत्रु हो, संतान हो या संबंधी हो - किसी का भी प्रेम जीतने अथवा किसी से संघर्ष करने के लिए व्यर्थ प्रयत्न मत करो। सभी में स्वयं को देखो और द्वैतभाव से पूर्णतया मुक्त हो जाओ।

संस्कृत श्लोक	गुरु प्रक्रिया की अनुभूति
<p>Stanza attributed to bhArativamsha.</p> <p>कामं क्रोधं लोभं मोहं त्यक्त्वाऽऽत्मानं भावय कोऽहम् । var पश्यति सोऽहम् आत्मज्ञानविहीना मूढा- स्ते पच्यन्ते नरकनिगूढाः ॥ २६ ॥</p>	<p>इस श्लोक की रचना का श्रेय भारतिवंश को दिया जाता है -</p> <p>काम, क्रोध, मोह और लोभ को त्याग दो। अपने वास्तविक स्वरूप का ध्यान करो। वे मूढ़ हैं जो स्वयं के प्रति जागरण में नहीं हैं। वे नर्क में पड़कर अनंत काल तक कष्ट भोगते हैं।</p>
<p>Stanza attributed to sumati.</p> <p>गेयं गीतानामसहस्रं ध्येयं श्रीपतिरूपमजस्रम् । नेयं सज्जनसङ्गे चित्तं देयं दीनजनाय च वित्तम् ॥ २७ ॥</p>	<p>इस श्लोक की रचना का श्रेय सुमति को दिया जाता है -</p> <p>नियमित रूप से गीता पाठ करो, अपने हृदय में विष्णु का ध्यान करो और उनके सहस्र नाम एवं अनंत महिमा का गान करो। सन्त और पवित्र लोगों के संग में रहकर आनंद प्राप्त करो। अपना धन दीन-दुखियों में दान करो।</p>
<p>Stanza attributed to sumati.</p> <p>सुखतः क्रियते रामाभोगः पश्चाद्धन्त शरीरे रोगः । यद्यपि लोके मरणं शरणं तदपि न मुञ्चति पापाचरणम् ॥ २८ ॥</p>	<p>इस श्लोक की रचना का श्रेय सुमति को दिया जाता है -</p> <p>जो इंद्रियसुख के लिए कामवासना में उतरता है, वह अपने शरीर को रोगों का शिकार बनाता है। यद्यपि मृत्यु सभी वस्तुओं का अंत कर देती है, फिर भी मनुष्य पापमय आचरण का त्याग नहीं करता है।</p>
<p>अर्थमनर्थं भावय नित्यं नास्तिततः सुखलेशः सत्यम् । पुत्रादपि धनभाजां भीतिः सर्वत्रैषा विहिता रीतिः ॥ २९ ॥</p>	<p>अर्थलोलुपता अमंगलकारी है। वस्तुतः इसमें आनंद नहीं है। इस सत्य पर सदा मनन करो। धनवान व्यक्ति तो अपने पुत्र से भी यह सोचकर भयभीत रहता है कि वह उसका धन न छीन ले। धन की सर्वत्र यही गति है, यही रीति है।</p>

संस्कृत श्लोक	गुरु प्रक्रिया की अनुभूति
<p>प्राणायामं प्रत्याहारं नित्यानित्य विवेकविचारम् । जाप्यसमेतसमाधिविधानं कुर्ववधानं महदवधानम् ॥ ३० ॥</p>	<p>जीवनी-शक्ति अर्थात् प्राणों को प्राणायाम द्वारा नियमित करो, बाहरी प्रभावों से निष्कंप बने रहो, नित्य - अनित्य का विवेकपूर्वक विचार करो, ईश्वर के पवित्र नाम का जाप करो और अशांत मन से मुक्त होकर निर्मन की शांति को उपलब्ध होओ। इन्हें सावधानीपूर्वक करो, अत्यंत सावधानीपूर्वक।</p>
<p>गुरुचरणाम्बुजनिर्भरभक्तः संसारादचिराद्भव मुक्तः । सेन्द्रियमानसनियमादेवं द्रक्ष्यसि निजहृदयस्थं देवम् ॥ ३१ ॥</p>	<p>हे गुरु के चरण कमलों के भक्त! तुम्हें संसार के बंधनों से शीघ्र ही मुक्ति मिल जाय। तुम्हें अपने हृदय में विराजमान भगवत्ता का दर्शन हो जाय।</p>
<p>मूढः कश्चन वैयाकरणो दुःकृङ्करणाध्ययनधुरीणः । श्रीमच्छङ्करभगवच्छिष्यै- र्बोधित आसीच्छोधितकरणः ॥ ३२ ॥</p>	<p>इस प्रकार शंकर के शिष्यों द्वारा व्याकरण के नियमों में मोहित वैयाकरण की संकीर्ण दृष्टिकोण को ज्ञान- प्रकाश से आलोकित एवं निर्मल किया गया।</p>
<p>भज गोविन्दं भज गोविन्दं गोविन्दं भज मूढमते । नामस्मरणादन्यमुपायं नहि पश्यामो भवाब्धितरणे ॥ ३३ ॥ भवतरणे</p>	<p>हे मूढ! गोविंद को भजो, गोविंद को भजो, गोविंद को भजो। प्रभु के नाम-जप के अतिरिक्त भवसागर पार करने का अन्य कोई उपाय नहीं है।</p>